B·Com ⇒ II[nd] Semester
Paper ⇒ IV[th]
Subject ⇒ Business Management

Lecture by :- Mr. Vikas Maurya
Assistant Professor
Department of Commerce
Nehru gram Bharti
(Deemed to be University)
Prayagraj

Topic ⇒ Co-Ordination (समन्वय)

समन्वय :- किसी संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसकी विभिन्न क्रियाओं में सामंजस्य एवं तालमेल स्थापित करना ही समन्वय है। यह प्रबन्ध का वह कार्य है जो किसी संस्था के विभिन्न विभागों, कर्मचारियों एवं उसके समूहों में इस प्रकार एकीकरण स्थापित करता है कि न्यूनतम लागत पर वांछित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता मिलती है।

कून्ट्ज व ओ॰ डोनेल के अनुसार, "समन्वय सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत प्रयत्नों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रबन्ध करता है।"

हेनरी फेयोल के अनुसार, "किसी संस्था के कार्य संचालन को सुविधाजनक एवं सफल बनाने के लिए उसकी समस्त क्रियाओं में तालमेल स्थापित करना ही समन्वय कहलाता है।"

Scanned with CamScanner

समन्वय की विशेषताएँ :=

1. प्रबन्धकीय उत्तरदायित्व
2. सामूहिक प्रयास
3. एक निरन्तर एवं गतिशील प्रक्रिया
4. कार्यों में एकता
5. आन्तरिक एवं बाह्य समन्वय
6. लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक
7. सर्वव्यापी क्रिया

समन्वय की प्रकृति :=

1. समन्वय संस्था के शीर्ष प्रबन्ध का उत्तरदायित्व है।
2. समन्वय एक प्रक्रिया है कोई स्थायी व्यक्ति नहीं।
3. समन्वय सामूहिक प्रयासों के लिए है।
4. सामूहिक लक्ष्यों की पूर्ति बिना समन्वय के कठिन होती है।
5. प्रयासों में समन्वय बनाये रखने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को संस्था के लक्ष्यों का ज्ञान होना आवश्यक है।

समन्वय की आवश्यकता :=

1. सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए
2. गतिशील वातावरण पर नियंत्रण करने के लिए
3. कर्मचारियों में संघर्ष को समाप्त करने के लिए
4. कार्यों में एकता स्थापित करने के लिए
5. भिन्न कार्य शैली एवं प्रकृति में स्वीकरण हेतु
6. बड़े संगठनों में संचालन एवं जटिलता के कारण

समन्वय का महत्व :=

1. समन्वय समूह भावना को प्रोत्साहित करता है।
2. समन्वय उचित दिशा निर्देश प्रदान करता है।
3. समन्वय अभिप्रेरणा को सुगम बनाता है।

Scanned with CamScanner

4. समन्वय संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग को संभव बनाता है।
5. निर्देश की एकता स्थापित करने में समन्वय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
6. समन्वय निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न क्रियाओं को व्यवस्थित क्रम प्रदान करता है।
7. समन्वय के माध्यम से प्रबन्धक अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह ठीक ढंग से करने में समर्थ होते हैं।

समन्वय के सिद्धान्त :-

1. स्पष्ट परिभाषित तथा सुतोल्य उद्देश्य
2. कार्य का उचित विभाजन
3. निरन्तर प्रक्रिया
4. गतिशीलता का सिद्धान्त
5. समय के अनुकूल
6. पारस्परिक सम्बन्ध का सिद्धान्त
7. समर्थ नेतृत्व का सिद्धान्त
8. कार्य का उचित विभाजन
9. प्रभावी संचार का सिद्धान्त

समन्वय की तकनीक :-

1. आदेश श्रृंखला द्वारा समन्वय
2. नियोजन द्वारा समन्वय
3. बजट द्वारा समन्वय
4. लिखित सम्प्रेषण द्वारा समन्वय
5. पर्यवेक्षक द्वारा समन्वय
6. समितियों द्वारा समन्वय
7. वैयक्तिक नेतृत्व द्वारा समन्वय

Scanned with CamScanner